

चाहता है। इसलिए रिसतों में अपेक्षाओं के बजाय समझ, संवाद और पारस्परिक सम्मान के अधिक महत्व देना चाहिए। जो मिला, उसने लिए कृतज्ञता; जो नहीं मिला, उससे सीखें। जीवन में हर इच्छा पूरी नहीं होती। कई बार सोचें कि वह नहीं मिला जिसके लिए उसने लंबे समय तक प्रयास किया। नौकरी, व्यवसाय, संबंधों में सफलता या किसी व्यक्तिगत लक्ष्य में असफलता निराशा कर सकती है। लेकिन हम असफलता को केवल हार मान लेना जीवन को देखने का सीमित दृष्टिकोण है। जो नहीं मिला, उससे यह सीखें भी मिल सकती है कि हमारे तैयारी में क्या कमी थी, हमारी अपेक्षा कितनी व्यावहारिक थी और आगे हमें किस दिशा में प्रयास करना चाहिए। इसी तरह जो मिला, उसने प्रति कृतज्ञ होना भी जरूरी है। कृतज्ञता व्यक्तियों को अपनी उपलब्धियों या मूल्य समझती है और लगातार अधिक पाने की बैसेनी से सुकुल रह त बचाती है। कृतज्ञता और सीख-ये दोनों मिलकर जीवन को संतुलित दृष्टि देते हैं। गिरना अंत नहीं संभलना महत्वपूर्ण है जीवन में किसी दौर में अपरिहाय है। हर व्यक्ति किसी न किसी तरह असफलता, निराशा, आर्थिक कठिनाई, संबंधों में तनाव या व्यक्तिगत संघर्ष से गुजर सकता है। महत्वपूर्ण यह नहीं कि व्यक्ति कितनी बार गिरा महत्वपूर्ण यह है कि उसने गिरने के बाद फिर उठना और किस तरह स्वयं को संभाला। गिरने अनुभव दे सकता है, टूटना भीर की ताकत पर परिचित करा सकता है और असफलता भविष्य की बेहतर तैयारी का अवसर बन सकती है। इसका अर्थ यह नहीं कि हर कठिनाई अपने आप सफलता में बदल जाती है। सफलता के लिए प्रयास, धैर्य और सही दिशा की आवश्यकता होती है। लेकिन कठिन परिस्थितियों के बीच सीखने की क्षमता व्यक्ति को अधिक परिपक्व जरूर बनाती है। शांति भाग से नहीं, संतुलन में आज की उपभोक्तावादी जीवनशैली में सुख के अवसर अधिक सुविधाओं और अधिक संसाधनों से उपलब्ध हो गए हैं। बड़ा घर, बेहतरीन वाहन, अधिक आय और आधुनिक सुविधाएं जीवन को आसमयस्क बना सकती हैं, लेकिन क्या ये मन की शांति की गारंटी देती हैं? शांति का संबंध केवल बाहरी साधनों से नहीं, बल्कि व्यक्ति की आंतरिक स्थिति से भी है। सत्य यह है कि यह सभ्यता में सहायता देती है कि हर इच्छा को तुरंत पूरा करना आवश्यक नहीं है। हर विवाद का जवाब देना जरूरी नहीं।

सोलह कारण भावनाएँ बनीं आत्मशुद्धि की राह

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com बेंगलुरु, 11 सितंबर 2026। बेंगलुरु में चल रहे आत्म-सिलिकॉन वषायोग-2026 के अंतर्गत आयोजित सोलह कारण भावना शिविर में श्रद्धालुओं को आत्मशुद्धि, आत्मनिरीक्षण और आध्यात्मिक उन्नति का व्यावहारिक मार्गदर्शन मिला।
निर्यापक श्रमण श्री 108 वीर सागर जी महाराज ने प्रवचन के माध्यम से सोलह कारण भावनाओं के आध्यात्मिक महत्व और आधुनिक जीवन में उनकी उपयोगिता पर विस्तार से प्रकाश डाला। शिविर में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने प्रत्यक्ष रूप से प्रवचन का लाभ लिया, वहीं डिजिटल माध्यमों से देश के विभिन्न क्षेत्रों तथा विदेशों में रहने वाले श्रद्धालु भी इससे जुड़े।
आयोजन के माध्यम से प्राचीन जैन आध्यात्मिक चिंतन को वर्तमान तकनीकी और व्यस्त जीवनशैली से जोड़ने का प्रयास दिखाई पड़ता। आत्मनिरीक्षण और आत्मपरिष्कार पर दिया मुनिश्री वीर सागर जी महाराज ने कहा कि सोलह कारण भावनाएँ केवल धार्मिक परंपरा का विषय नहीं हैं, बल्कि आत्मचिंतन और आत्मपरिष्कार की महत्वपूर्ण साधना हैं। इनके माध्यम से व्यक्ति अपने भीतर मौजूद राग, द्वेष, अहंकार, लोभ, मोह और आसक्ति जैसी प्रवृत्तियों को पहचानकर उनसे ऊपर उठने



कारण भावनाओं का चिंतन व्यक्ति में सम्यक् दर्शन, ज्ञान, विनय, संयम, तप, त्याग, सेवा और करुणा जैसे गुणों को विकसित करने की प्रेरणा देता है। दर्शन चिश्तुद्धि से सही दिशा की शुरूआत प्रवचन में दर्शन विशुद्धि को आध्यात्मिक यात्रा का महत्वपूर्ण आधार बताया गया। मुनिश्री ने कहा कि व्यक्ति की दृष्टि शुद्ध होने पर उसके विचार, निर्णय और आचरण भी सही दिशा में आगे बढ़ते हैं। इसलिए बाहरी परिस्थितियों को बदलने

से पहले स्वयं की दृष्टि और आंतरिक स्थिति को समझना आवश्यक है। सम्यक् दृष्टि व्यक्ति को परिस्थितियों, वस्तुओं और संबंधों के प्रति संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करती है तथा जीवन में विवेकपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता को मजबूत करती है। सेवा से घटता है स्वार्थ और अहंकार मुनिश्री ने वैयावृत्य, अर्थात निःस्वार्थ सेवा, के महत्व को भी रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि सेवा केवल किसी अन्य व्यक्ति की सहायता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर स्वार्थ और अहंकार को हटाने का माध्यम भी बनती है। साधु-संतों, धार्मिक गतिविधियों, समाज और जरूरतमंदों की क्षमता के अनुसार सेवा

करने से विनय, करुणा और त्याग की भावना विकसित होती है। सेवा का भाव व्यक्ति को व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर व्यापक कल्याण की ओर प्रेरित करता है। तकनीकी युग में आध्यात्मिक चिंतन की प्रासंगिकता बेंगलुरु जैसे तकनीक-प्रधान शहर में आयोजित शिविर में आधुनिक जीवन की चुनौतियों के संदर्भ में आध्यात्मिक चिंतन की उपयोगिता भी सामने आई। तेज रफ्तार जीवन, प्रतिस्पर्धा, निरंतर डिजिटल संपर्क और उपलब्धियों की दौड़ के बीच मानसिक तनाव, चिंता और असंतोष जैसी स्थितियां भी बढ़ रही हैं। ऐसे वातावरण में सोलह कारण भावनाओं का चिंतन व्यक्ति को कुछ समय के लिए बाहरी भागदौड़ से हटकर अपने भीतर देखने और जीवन की दिशा पर विचार करने का अवसर देता है। मुनिश्री ने स्पष्ट किया कि आध्यात्मिकता जीवन से अलग कोई विषय नहीं है। इसका वास्तविक प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार, विचारों, संबंधों और निर्णयों में दिखाई देना चाहिए। भावनाओं को आचरण में उतारने का आह्वान श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए मुनिश्री वीर सागर जी महाराज ने भावनाओं को केवल सुनने या पढ़ने तक सीमित न रखने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि इनके वास्तविक लाभ के लिए सड़-इन्हें दैनिक जीवन के व्यवहार में उतारना आवश्यक है। स्वाध्याय से ज्ञान के प्रति

रुचि, विनय से अहंकार में कमी, त्याग से आसक्ति का क्षय, सेवा से करुणा और आत्मनिरीक्षण से अपनी कमियों को पहचानने की क्षमता विकसित की जा सकती है। इसी क्रम में अभिक्षण जानकारीपूर्ण व्यक्ति को निरंतर ज्ञान और आत्मचिंतन से जुड़े रहने की प्रेरणा देता है, जबकि शक्ति त्याग अपनी सामर्थ्य के अनुसार त्याग और परोपकार की भावना विकसित करने का मार्ग प्रशस्त करता है। वषायोग का उद्देश्य आध्यात्मिक संवाद को विस्तार देना आत्म-सिलिकॉन वषायोग-2026 के अंतर्गत बेंगलुरु में आयोजित विभिन्न धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और संस्कारमूलक गतिविधियों का उद्देश्य बच्चों, युवाओं, परिवारों, पेशेवरों और समाज के विभिन्न वर्गों को आत्मचिंतन एवं धर्म से जोड़ना है। सोलह कारण भावना शिविर इसी व्यापक उद्देश्य की एक महत्वपूर्ण कड़ी रहा। आयोजन ने यह संदेश दिया कि तकनीकी प्रगति और आध्यात्मिक जीवन एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। तकनीक जीवन को सुविधाजनक बना सकती है, लेकिन जीवन को सही दिशा देने के लिए विवेक, संयम, करुणा और आत्मचिंतन भी उतने ही आवश्यक हैं। देश-विदेश से श्रद्धालुओं की सहभागिता शिविर में स्थानीय श्रद्धालुओं के साथ विभिन्न क्षेत्रों

से जुड़े जैन परिवारों और देश-विदेश में रहने वाले समाजजनों ने डिजिटल माध्यम से सहभागिता की। इससे प्रवचन का संदेश व्यापक स्तर तक पहुंचा और बेंगलुरु में चल रहे आत्म-सिलिकॉन वषायोग-2026 की आध्यात्मिक गतिविधियों को व्यापक जैन समुदाय से जोड़ने में सहायता मिली। आयोजन से जुड़े श्रद्धालुओं के अनुसार, सोलह कारण भावनाओं पर केंद्रित यह शिविर धार्मिक जानकारी के साथ-साथ जीवन-दृष्टि को परिष्कृत करने और आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देने वाला रहा। आत्मपरिवर्तन से सामाजिक उत्थान की ओर प्रवचन का केंद्रीय संदेश आत्मपरिवर्तन और आत्मशुद्धि के माध्यम से जीवन को बेहतर बनाने पर केंद्रित रहा। व्यक्ति के भीतर विनय, सेवा, त्याग, करुणा, संयम और सम्यक् दृष्टि जैसे गुण विकसित होते हैं तो उनका सकारात्मक प्रभाव परिवार और समाज तक पहुंच सकता है। निर्यापक श्रमण श्री 108 वीर सागर जी महाराज ने श्रद्धालुओं को सोलह कारण भावनाओं को निरंतर चिंतन और आचरण का विषय बनाने की प्रेरणा दी। शिविर ने यह संदेश दिया कि आध्यात्मिक उन्नति किसी एक आयोजन तक सीमित नहीं, बल्कि अपने विचारों और आचरण को निरंतर शुद्ध करने वाली जीवनभर की साधना है। समाचार प्रेषक: विपिन कुमार जैन, बेंगलुरु

महेंद्र मुणोत का सम्मान



पाटिल, शंकर पागोजी, डॉ. श्वेता सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे। सम्मान समारोह के माध्यम से सामाजिक एवं सार्वजनिक जीवन में उल्लेखनीय योगदान देने वाले व्यक्तित्वों के प्रति सम्मान की भावना व्यक्त की गई। आयोजकों ने कार्यक्रम को गहमापूर्ण वातावरण में संपन्न कराया। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों एवं गणमान्यजनों ने आयोजन की सराहना करते हुए सामाजिक सहभागिता और आपसी सहयोग को मजबूत बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। समाचार प्रेषक: उपेन्द्र कुमार बेंगलुरु

सेवा संकल्प अभियान 17 सितंबर से, बूथ से घर तक होंगे 12 कार्यक्रम

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com बेंगलुरु, 12 सितंबर 2026। भारतीय जनता पार्टी की ओर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 25 वर्ष की सार्वजनिक सेवा को केंद्र में रखते हुए सेवा संकल्प अभियान चलाया जाएगा। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बी.वाई. विजयेंद्र ने बताया कि यह अभियान 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक चलेगा। अभियान के दौरान राज्य के प्रत्येक बूथ और घर तक पहुंच बनाने के साथ करीब 12 अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। मल्लेयक्वम स्थित भाजपा प्रदेश कार्यालय जगन्नाथ भवन में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में विजयेंद्र ने कहा कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन की इच्छा के अनुसार अभियान को व्यापक स्तर पर संचालित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि कार्यक्रमों का उद्देश्य प्रधानमंत्री मोदी की जनसेवा और केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी लोगों तक पहुंचाना है। छात्रों से लेकर लाभार्थियों तक जुड़ेगे कार्यक्रम विजयेंद्र के अनुसार, भारत का सपना कार्यक्रम के तहत विद्यार्थियों के लिए चित्रकला और भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। वहीं नमो सेवा स्टूट प्ले के माध्यम से देश में हुए बदलावों और विकास कार्यों की जानकारी लोगों तक पहुंचाई जाएगी। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं से जुड़ने के लिए आंगनवाड़ी मिलन कार्यक्रम भी प्रस्तावित है। उन्होंने बताया कि बदलाव की कहानी कार्यक्रम के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की योजनाओं और उनके लाभार्थियों पर पड़े प्रभाव को सामने रखा जाएगा। इसके अलावा विकसित भारत संकल्प यात्रा और सेवा ज्योति यात्रा जैसे कार्यक्रम भी अभियान का हिस्सा होंगे। 25 सेवा गतिविधियों पर रेहणा जोर अभियान के तहत सेवा गतिविधियों को भी विशेष महत्व दिया जाएगा। विजयेंद्र ने बताया कि रक्तदान शिविर, पौधारोपण, स्वच्छता अभियान, स्वास्थ्य शिविर, प्लास्टिक के प्रति जागरूकता और साइबर सुरक्षा जागरूकता सहित करीब 25 सेवा गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। उन्होंने सेवा सेतु अभियान के जरिए केंद्र सरकार की कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी पात्र लोगों तक पहुंचाने और योग्य लाभार्थियों का पंजीकरण करने की बात भी कही। नवाचार और जनप्रतिनिधियों की भागीदारी विजयेंद्र ने बताया कि रंगोली राष्ट्र सहित विभिन्न कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। बेंगलुरु में प्रस्तावित नेशनल इनोवेशन चैलेंज में विद्यार्थी, आईटी क्षेत्र से जुड़े कर्मचारी और नए उद्यमी हिस्सा ले सकेंगे। अभियान के 12वें कार्यक्रम के रूप में जनसेवक महाकुंभ आयोजित किया जाएगा, जिसमें पंचायत स्तर से लेकर सांसद स्तर तक के जनप्रतिनिधियों की भागीदारी का लक्ष्य रखा गया है। 1.25 लाख जनप्रतिनिधियों के साथ वंदे मातरम का दावा भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि अभियान के दौरान एक साथ वंदे मातरम गायन का कार्यक्रम भी आयोजित किया जाएगा। उनके अनुसार इसमें करीब 1.25 लाख जनप्रतिनिधियों की भागीदारी का लक्ष्य है और गीत के सभी पदों का समूहिक गायन किया जाएगा।

शांतिसागर महाराज के समाधि दिवस पर गूंजा संयम का संदेश

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com बेंगलुरु, 12 सितंबर 2026। जैन समाज के प्रथमाचार्य एवं चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महाराज के समाधि दिवस पर देश-विदेश के विभिन्न जैन केंद्रों में श्रद्धापूर्वक स्मरण, पूजन एवं विशेष धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस अवसर पर श्रद्धालुओं को निर्यापक श्रमण श्री 108 वीर सागर जी महाराज का विशेष प्रवचन सुनने का अवसर मिला। प्रवचन में वीर सागर जी महाराज ने आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के संयम, तप, त्याग, वैराग्य और आत्मसाधना को स्मरण करते हुए उनके जीवन को दिग्गमर मुनि परंपरा के पुनर्जागरण की प्रेरणादायी मिसाल बताया। उन्होंने कहा कि आचार्य श्री ने अपने आचरण के माध्यम से आत्मकल्याण के मार्ग को व्यवहार में उतारने का संदेश दिया। कठिन विहार और कठोर साधना का स्मरण प्रवचन के दौरान आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के कठिन विहार, लंबी पदयात्राओं और महाप्रतों के कठोर पालन से जुड़े प्रसंगों का उल्लेख किया गया। बताया गया कि कठिन परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने समता, आत्मसंयम और साधना का मार्ग नहीं छोड़ा।

वीर सागर जी महाराज ने कहा कि आचार्य श्री का जीवन तप, ध्यान और वैराग्य की साधना से प्रेरित रहा। उनके जीवन से जुड़े प्रसंग साधकों को धैर्य, निर्भयता और आत्मविश्वास के साथ आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। आगम संरक्षण और साधु परंपरा में योगदान

प्रवचन में आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज द्वारा जैन आगम एवं प्राचीन ग्रंथों के संरक्षण, तीर्थ क्षेत्रों के पुनरुत्थान तथा दिगम्बर साधु परंपरा को सुदृढ़ करने में निभाई गई भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया। आचार्य श्री के जीवन को जैन समाज के लिए आध्यात्मिक अनुशासन, स्वाध्याय और संयम का प्रेरक स्रोत बताते हुए श्रद्धालुओं को उनके आदर्शों से सीख लेने का संदेश दिया गया। 36 दिन की साधना के बाद समाधिस्मरण

धार्मिक परंपरा के अनुसार, वर्ष 1955 में कुंथलगिरि में आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज ने यम सल्लेखना धारण की और 36 दिनों की साधना के बाद समाधिस्मरण प्राप्त किया।

समाधि दिवस के अवसर पर वीर सागर जी महाराज ने इसे केवल एक महान संत के स्मरण का अवसर न मानकर आत्मचिंतन और आत्मशुद्धि की प्रेरणा से जोड़ने का आह्वान किया। उन्होंने श्रद्धालुओं से सत्य, स्वाध्याय और संयम जैसे गुणों को दैनिक जीवन में अपनाने की अपील की। उन्होंने कहा कि महापुरुषों के प्रति सच्ची श्रद्धा उनके बाहरी स्वरूप की पूजा तक सीमित न होकर उनके जीवन में प्रकट हुए गुणों को आत्मसात करने में है।

मंदिरों में हुए धार्मिक आयोजन समाधि दिवस के अवसर पर विभिन्न जैन मंदिरों और धार्मिक केंद्रों में विशेष पूजन, प्रार्थना तथा प्रवचन कार्यक्रम आयोजित किए गए। श्रद्धालुओं ने भावपूर्वक आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज का स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। समाचार प्रेषक: विपिन कुमार जैन, बेंगलुरु

एआई से चिकित्सा अनुसंधान तक, आईसीएमआर कार्यशाला का समापन

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com बेंगलुरु, 12 सितंबर 2026। द ऑक्सफोर्ड कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, बोम्बनहल्ली, बेंगलुरु में एमसीए एवं जैव प्रौद्योगिकी विभागों के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के प्रायोजन में आयोजित व्यावहारिक कार्यशाला का शुक्रवार को समापन हुआ। कोड से क्लानिक तक: जैव-चिकित्सीय अनुसंधान में स्नातक इंजीनियरिंग अनुप्रयोगों के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मशीन लर्निंग आधारित रोग पूर्वानुमान, निदान प्रणालियाँ और सटीक चिकित्साद्व विषयक इस कार्यशाला में कृ कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों, शोधार्थियों और प्रतिभागियों को रोगों के पूर्वानुमान, निदान प्रणालियों के विकास तथा सटीक चिकित्सा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मशीन लर्निंग के व्यावहारिक अनुप्रयोगों से परिचित कराना था। विभिन्न सत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं में एआई के उपयोग, रोग पूर्वानुमान, जैव-चिकित्सीय अनुसंधान, आणविक निदान, जैव-सूचक खोज, कैंसर अनुसंधान और चिकित्सा प्रौद्योगिकी से जुड़े विषयों पर विशेषज्ञ मार्गदर्शन दिया गया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. गीतांजलि सगीना, वैज्ञानिक-सी एवं कार्यक्रम अधिकारी, मानव संसाधन विकास प्रभाग, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली



उपस्थित रहें। विशिष्ट अतिथि डॉ. मकारी चिकित्सा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मशीन लर्निंग के व्यावहारिक अनुप्रयोगों से परिचित कराना था। विभिन्न सत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं में एआई के उपयोग, रोग पूर्वानुमान, जैव-चिकित्सीय अनुसंधान, आणविक निदान, जैव-सूचक खोज, कैंसर अनुसंधान और चिकित्सा प्रौद्योगिकी से जुड़े विषयों पर विशेषज्ञ मार्गदर्शन दिया गया। समापन सत्र में

का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। कार्यशाला के आयोजन सचिव डॉ. धरमवीर, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, एमसीए विभाग, ने आयोजन के समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यशाला के माध्यम से अभियांत्रिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और जैव-चिकित्सीय अनुसंधान के बीच अंतर्विषयक सहयोग को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया। समापन सत्र में



भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com बेंगलुरु, 12 सितंबर 2026। श्री जिन कुशल सूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट, बसवनगुडी में पशुपुष्प महापर्व के अवसर पर परमात्मा महावीर के जन्म वांचन एवं चौदह महास्वप्न दर्शन का भव्य धार्मिक आयोजन श्रद्धा और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। चातुर्मास के लिए विराजित मलयप्रभ सागर जी एवं साध्वी डॉ. प्रियश्रद्धांजना श्री जी म. सा. की निश्रा में आयोजित कार्यक्रम में बेंगलुरु के विभिन्न उपनगरों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। कार्यक्रम में श्रद्धालुओं ने भगवान महावीर की माता त्रिशला द्वारा देखे गए चौदह महास्वप्नों के दर्शन किए तथा गुरुदेव के मुखारविंद से कल्पित एवं विधिपूर्वक विराजमान करने के साथ अष्टप्रकारी पूजा का

लाभ समाज के विभिन्न परिवारों ने लिया। धार्मिक प्रवचन में भगवान महावीर के वर्धमान से महावीर बनने की आध्यात्मिक यात्रा, दीक्षा, साधना और केवलज्ञान से जुड़े प्रसंगों का वर्णन किया गया। श्रद्धालुओं ने जन्म वांचन एवं स्वप्न दर्शन के अवसर पर धार्मिक उत्सव की खुशियां साझा कीं। प्रवचन के दौरान जैन परंपरा में वर्णित भगवान महावीर के जन्म, उनके नामकरण, किष्वा और तप-साधना से जुड़े प्रसंगों का उल्लेख किया गया। बताया गया कि वर्धमान नाम उनके जन्म के समय समुद्रि और वृद्धि की मान्यता से जुड़ा है। दीक्षा से पूर्व वर्षादीन तथा दीक्षा के बाद लंबे समय तक चली कठोर साधना के प्रसंग भी श्रद्धालुओं को सुनाए गए। पालना और स्वामी वात्सल्य का आयोजन प्रवचन के पश्चात वीर प्रभु का पालना अपने निवास स्थान पर ले जाने का लाभ समुद्री निवासी संयम कुमार-पद्मा देवी मेहता परिवार ने लिया। जन्म वांचन एवं

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com मदुरै, 12 सितंबर 2026। पशुपुष्प महापर्व के पावन अवसर पर भगवान महावीर स्वामी के जन्म वाचन के पश्चात पारणा को लाभार्थी परिवार के घर ले जाने का धार्मिक लाभ उम्मेदाबाद निवासी एवं मदुरै प्रवासी

भी विशेष उत्साह दिखाई दिया। मार्ग में जगह-जगह धर्ममौ बंधुओं ने शोभायात्रा का स्वागत किया। इस अवसर पर श्री साँचा सुमतिनाथ संघ के ट्रस्टी मीटलाल संखलेवा, बगदावस्मल हरण, शिवराज भंडारी, मनोहरमल वाणीगोट, कौतिलाल बन्दा गुप्ता, रतनचंद्र संखलेवा, विजयराज गुलेच्छा सहित श्री महावीर जैन सेवा मंडल के सदस्य, श्री संघ के



गणमान्यजन तथा बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकार्य एवं बच्चे उपस्थित रहे। श्रद्धालुओं ने कहा कि भगवान महावीर स्वामी के जन्म वाचन के बाद पारणा को गांजे-बाजे के साथ लाभार्थी परिवार के घर ले जाने का अवसर धर्म, भक्ति और आनंद से परिपूर्ण रहा। साध्वी भगवतों के मंगल आशीर्वाद से आयोजन में आध्यात्मिक उत्साह और श्रद्धा का वातावरण बना रहा। श्री संघ प्रवक्ता दिनेश सालेचा ने बताया कि पशुपुष्प महापर्व के दौरान आयोजित ऐसे धार्मिक कार्यक्रम समाज में एकता, संस्कार और धर्म के प्रति श्रद्धा को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पर्व के अवसर पर समाजबंधु धार्मिक आराधना एवं विभिन्न आयोजनों के उत्साहपूर्वक भाग ले रहे हैं। समाचार प्रेषक: दिनेश सालेचा, मदुरै, तमिलनाडु



